Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 13, Issue No. 1, April-2017, ISSN 2230-7540

चित्रा मुद्गल के उपन्यासों में नारी जीवन

Dr. Rajiv Sharma*

सार – ***साहित्य सृजन बहुआयामी आत्म अभिव्यक्ति है, जो एक साथ कई उद्देश्यों को संधान करता है। स्वांत सुखाय होते हुए भी पाठक का मनोरंजन एवं ज्ञानवर्धक उसका प्रथम उद्देश्य है। स्त्री विमर्श साहित्य के लिए नित्य नए ज्वलंत मुद्दे उपलब्ध करवा रहा है अनेक पुरुष तथा महिलाएं स्त्री समस्याओं को लेकर रचनाएं लिख रहे हैं इन रचनाओं में परिवर्तित वर्तमान काल की स्थितियां का वर्णन तो होता ही है। साथ ही साथ भूतकाल के आधार पर भविष्य की दिशाओं को स्वस्थ बनाने के प्रयास भी दिखाई देते हैं। बीसवीं सदी के उत्तरार्ध के दशकों में भारतीय कवित्रीयों तथा लेखिकाओं ने प्रतिरोध के स्वर में मुखर होकर यह जता दिया है कि उसकी समस्याओं के समाधान और उसकी उपेक्षाओं आकांक्षाओं का निर्णय अकेला पुरुष कर सकेगा समाज को उसके अस्तित्व व्यक्तित्व को स्वीकार करना होगा उसकी दिक्कतों को समझना होगा मर्द सत्ता या पितृ सत्ता द्वारा तय होती कानून व्यवस्था के बरस संविधान कानून लोकतंत्र आधारित नियमावली स्थान लेती जा रही है औरत पर बलपूर्वक दबाव कायम करने के लिए धर्म ग्रंथों तथा खुदा भगवान के डर दिखाने की प्रवृत्ति को भी तर्कशीलता निर्मल कर दिया है।***

----------X----------

प्रस्तावना:

सृजन को मनोरंजन तक सीमित रखना एक संकीर्ण का प्रदर्शन है। साहित्य आत्म रंजन के साथ-साथ कई उच्च स्तर और वृहत्तर उद्देश्यों को पूरा करने में सहायक है। सामाजिक राजनीतिक आर्थिक क्षेत्र में आदर्श एवं मूल्य स्थापना में साहित्य का कार्य विश्व स्तर पर मान्य है। वास्तव में साहित्य, कला एवं राजनीतिक भौगोलिक सीमाओं को पार करके कारगर परिवर्तन करते रहे है। वर्तमान समय में हिंदी साहित्य बहुमुखी रूप में विविध पक्षों में रचा जा रहा है और संदेश वाहक के रूप में व्यापक प्रभाव रख रहा है। नई धाराएं दलित साहित्य आदिवासी साहित्य तथा स्त्री साहित्य अपने-अपने वर्गों की आवश्यकताएं अपेक्षाएं इतिहास विकास की दिशा तथा दिशाओं को लेकर अनेक कृतियां सम्मुख आई है।

स्त्री विमर्श साहित्य के लिए नित्य नए ज्वलंत मुद्दे उपलब्ध करवा रहा है। अनेक पुरुष तथा महिलाएं स्त्री समस्याओं को लेकर रचनाएं लिख रहे है। इन रचनाओं में परिवर्तित वर्तमान काल की स्थितियां का वर्णन तो होता ही है, साथ ही साथ भूतकाल के आधार पर भविष्य की दिशाओं को स्वस्थ बनाने के प्रयास भी दिखाई देते हैं। इतिहास में ग्रंथावली भरी पड़ी है जहां वेद रामायण महाभारत पुराण स्त्री के साथ पक्षपात एवं अन्याय प्रसंगों से भरे पड़े है। कुंती द्रोपती सीता अहिल्या शकुंतला रेणु का पुरुषों यहां तक कि निकट के रिश्तेदार पुरुषों के अन्याय की शिकार हुई है। मध्यकाल का इतिहास भी नारी पर अत्याचार से अछूता नहीं रहा आधुनिक परिस्थितियों में विकास की ओर बढ़ती स्त्री के सम्मुख नई सामाजिक आर्थिक उलझन में उपस्थित हो चुकी हैं। जो उसे अंततः शोषण की ओर धकेल देती हैं बहुत से मिथ कहावतें अभी लोगों द्वारा सत्य माने जाते हैं। समाज में नारी को प्रताड़ित करने के लिए प्रयोग करता है किंतु नारी के शैक्षिक अवसरों की उपलब्धता ने उसे लेखन और वाणी से अपनी बात कहने का अवसर प्रदान किया है।

बीसवीं सदी के उत्तरार्ध के दशकों में भारतीय कवित्रीयों तथा लेखिकाओं ने प्रतिरोध के स्वर में मुखर होकर यह जता दिया है, कि उसकी समस्याओं के समाधान और उसकी उपेक्षाओं आकांक्षाओं का निर्णय अकेला पुरुष कर सकेगा समाज को उसके अस्तित्व व्यक्तित्व को स्वीकार करना होगा उसकी दिक्कतों को समझना होगा । मर्द सत्ता या पितृ सत्ता द्वारा तय होती कानून व्यवस्था के बरस संविधान कानून लोकतंत्र आधारित नियमावली स्थान लेती जा रही है। औरत पर बलपूर्वक दबाव कायम करने के लिए धर्म ग्रंथों तथा खुदा भगवान के डर दिखाने की प्रवृत्ति को भी तर्कशीलता निर्मल कर दिया है आधुनिक लेखिकाओं की एक सूची है। जिन्होंने अपने लेखन में नारी के पक्ष में खुलकर आवाज बुलंद की है।

गरम धर्मस्थल शिक्षा संस्थान कार्यालयों परशु रेलवे बस स्टॉप रेलवे स्टेशन खेत खलियान में कौन सा स्थान है। जहां कार्यरत महिलाओं के विषय में आधुनिक लेखिकाओं ने नहीं लिखा धार्मिक संस्कारों कर्मकांडों प्रथाओं कहानियों गालियों मजा को उड़ानों गीतों में छुपी नारी विरोधी शब्दावली का विरोध किया जा रहा है। अब प्रश्न है, कि आधुनिक साहित्य की महिला रचनाकारों ने वर्तमान नारी को अपनी कृतियों में किस प्रकार दिशा दिखाई है।

उनकी आज की दशा को किस तरह साहित्य में स्थान दिया है। यह अनवेषण का विषय है प्रस्तुत शोध आलेख विषय को लेकर लिखा गया है। इसकी विवेच्य विषय वस्तु सफल कथा कार उपन्यास कार चित्र मुदगिल की रचना कर्म से संबंधित है।

इन्होंने अपनी रचनाधर्मिता से आज की नारी की दशा और दिशा को कैसे निर्धारित किया है। 10 दिसंबर 1944 में चेन्नई में जन्मी और मुंबई में शिक्षा प्राप्त चित्रा मोदगिल आधुनिक साहित्य की प्रतिनिधि महिला साहित्यकार हैं। जो व्यापक स्तर पर पठित प्रवेश निश्चित तथा सम्मानित रही है। लगभग समाज एवं राजनीति देश काल के बहुत से विषयों पर उनकी लेखनी चली है। इनकी 37 प्रकाशित पुस्तकों में से आवा आधुनिक उपन्यासों में अन्यतम स्थान रखता है। स्त्री विमर्श आधुनिक काल की मांग है एवं मानवीय संवेदनाओं की पूजा चित्र मुदगिल ने अपनी कहानियों उपन्यासों में स्त्री संबंधित अनेक समस्याओं को उठाया है। अपितु अपने सुधर पत्रों के माध्यम से कारगर तरीके से समाधान की ओर भी अग्रसर किया है। उनकी रचनाओं स्त्री वर्ग की अनुभूतियां है, आनंद व्यथाएं हैं खुशियां हैं। उन्होंने नितांत सरल शब्दों में उनके जीवन से जुड़े खट्टे मीठे अनुभव अच्छे बुरे समय की शाब्दिक अभिव्यक्ति है। दबे कुचले वर्ग जिसमें महिलाएं भी सम्मिलित थी उनकी संघर्षशील नायक की हत्या पर लेखिका का हृदय विद्रूप कर उठता है। यहां पर चित्रा मोदगिल ने अपने शब्दों को अभिव्यक्ति दी है। संघर्ष प्रीत जितनी बार टूटती है तोड़ी जाती है, किसी और की पीठ में लोहा स्तंभ सदन हजारों हजारों आम जनों की पीठ में उतर जाती है। चाहे वह किसी भी मर्द की पीठ हो या स्त्री की युवक युवती की यह कथा कर्म संघर्ष कार नेतृत्व महिला या पुरुष किसी में भी देख रही है। यह चित्रा जी की महिला के प्रति सशक्त होने की संभावना का प्रगटीकरण है। उनकी यह संतुष्टि आश्वासित है कि स्त्री समाज का समय आ गया है। उनकी व्यक्त करने की विशिष्ट शैली मन को उद्वेलित तथा हृदय को स्पर्श करने की क्षमता रखती है। लेखिका ने अपने चारों और घटने वाली घटनाओं को शब्दों में बांधकर सजीवता से सृजन किया है।

परंपरागत समाज स्त्री यहां तक कि बालिकाओं के साथ भेदभाव हर स्तर पर देखा गया है। खाने-पीने ओढ़ने पहनने शिक्षा मैं स्त्री को गौण या उनकी उपलब्धि को कमतर आका गया है। दूध नामक लघु कथा के माध्यम से चित्रा मोदगिल ने ऐसी ही त्वरित पर कड़ा शाब्दिक प्रहार किया है। बेटी के दूध पीने की इच्छा जताने पर मां का कहना है कि दूध पीकर क्या तुमको लठैत बनना है दूध घर के मर्द पीते हैं दूध पी रही थी कमीनी। चित्रा मोदगिल का लड़की के माध्यम से प्रतिवाद देखिए एक बात पूछूं मां आंसू भीगी उसकी आवाज की ढीठ हो आई, मैं जन्मी तो दूध उतरा था तुम्हारी छातियों में तो मेरे हिस्से का छातियों का दूध पी क्या तुमने मर्दों को पिला दिया था। कहानी ताशमहल की नायिका का घर और कार्यालय में संघर्ष करती कई बार टूट कर बिखर जाती है, पर जीवन इतनी कि हर बार खड़ी हो जाती है पूर्व पति की मृत्यु के पश्चात अपने पुत्र को संभालती हुई घर तक छोड़ने के कगार पर ठेल दी जाती है।

उपन्यास आवा में चित्रा मुदगिल ने वंचित परिवारों के जीवन के विविध रंगों अभाव दैन्य श्रम संघर्ष के साथ-साथ सपनों के आयामी संसार को भी स्थान दिया। गेंद कहानी में चित्रा जी ने वृद्ध आश्रम का जीवन बड़ी संजीदगी और सजीवता से उकेरा है, बच्चे एकमात्र मकान नाम करवा चुके हैं। उसी शहर में होने पर भी घर के किसी पर्व आयोजन उन्हें याद नहीं किया जाता मृत्यु उपरांत होने वाले क्रियाकलापों की जिम्मेदारी से पल्ला झाड़ते हुए संवेदनहीन समाज की अर्थी निकलती प्रतीत होती है। गैरबराबरी और उससे समाज में आई गिरावट को चित्रा मोदगिल ने कई बार अपने साहित्य में स्थान दिया है। दया और विवशता भी शब्दों का चोला ओढ़कर मुखर हो जाते हैं। भूख कहानी में एक अभावग्रस्त मां भूख से पीड़ित अपने बच्चों को भिखारिन को इस उम्मीद से दे देती है, कि उसे कुछ खाने को मिलेगा सांझ के समय बालक की दशा बिगड़ जाती है और नृशंस हत्याचार व भूख कि ताब न सह पाने के कारण बच्चे के प्राण नहीं बच पाते इन व्यवस्था के दृष्टांतों के बरअक्स जीवट के उदाहरण भी चित्रा मोदगिल के साहित्य में प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है। अभी भी कहानी में एक विकराल बन चुकी दहेज समस्या पर कथाकार की लेखनी चली है सिर्फ कहानी की नायिका पति की मृत्यु के बाद मृत्यु पर मिली राशि और दहेज की मांग पर प्रताड़ित रहती है। अंततः अपना साहस समेट कर पूरी ताकत के साथ चीख पड़ती है। पड़ोसियों ने गलत इत्तिला नहीं दी बाबूजी मुझे जीवित देखना चाहते हैं, तो यहां से फौरन निकाल कर ले चलिए अभी भी वक्त है, अभी प्रशासनिक व्यवस्था की कहानी कार ने चेहरे कहानी में अच्छी खबर ली है। रेलवे स्टेशन की सभी

www.ignited.in

भिखारियों को पुलिस बाहर फेंक रही है वहां की भिखारी ने आक्रोशित स्वर में उनकी पोल खोलती है। मैं बैठेगी यह जगह मेरी है और काया को नहीं बैठेगी वह बड़े बाबू बैइठते हैं मध्य हफ्ता लेते मेरे से हफ्ता और यह भड़वे उसने सिपाहियों को दूर का कैसे पकड़ेंगे मेरे को रात यार्ड में ले जाकर जाकर भ्रष्ट आचरण युक्त पुरुष को भिखारिन से भी चेतावनी मिल सकती है गिरे हुए मान साथ छोड़ देता है।

अभी भी कहानी में चित्रा मोदगिल ने दहेज के साथ-साथ स्त्री की आर्थिक दिक्कतों का एक नया पक्ष प्रस्तुत किया है। वह बर्दाश्त की सभी हदों को पार करती हुई प्रताड़ित होती रही कहानी की नायिका शिल्प के पति पायलट मुकेश का दुर्घटना में निधन हो जाता है पति की मृत्यु पर अनुकंपा राशि 5,00,000 के लिए उसकी सास उसे झूठा दरियादिली का प्रदर्शन करके घर रखा लेती है। अपने दूसरे बेटे से शिल्पा का विवाह भी कर देती है विवाह के बाद भी अनेक अत्याचार से पीड़ित शिल्पा बेहोशी में डूब जाती है। पर उनका षड्यंत्र को समझ जाती है। पड़ोसियों के बुलावे पर आई पुलिस के सामने वह चीख पड़ती है कि पड़ोसियों ने गलत इत्तिला नहीं दी बाबूजी मुझे जीवित देखना चाहते हो तो यहां से फौरन निकाल ले चलिए अभी भी वक्त है। अभी इस प्रकार चित्रा मोदगिल न टूटने वाली समर्थ पात्रों के गठन करती हैं और पाठकों को समुचित संदेश देने में सफल होती हैं। समाज में स्त्री पीड़ित और त्रस्त है लेखिका ने उनकी स्थितियों को खूब उकेरा है। किंतु नारी स्वयं भी यदाकदा किसी को प्रताड़ित करती है यह भी सत्य है चित्रा मोदगिल की कहानी एक काली एक सफेद ऐसी ही उग्र स्वभाव की जिद्दी करूर झूठी पाखंडी और आत्म हीन नकारात्मक चरित्र की पात्रा है। वह अपनी हठ से पति और अपनी बेटी के जीवन को नर्क बना देती है। पिता पुत्री से मारपीट तक करती है। पति का सिर भी फट जाता है यहां लेखिका समाज को संदेश देती है कि स्त्री के एक पक्ष को ही सदैव दृष्टिगत ना रखा जाए।

ताशमहल चित्र मोदगिल की प्रतिनिधि कहानियों में शामिल है। यहां नायिका दुविधा की शिकार होकर अमानवीय पीड़ा बर्दाश्त करती है। विश्वासघात की शिकार होकर वह अपने दूसरे पति निश्चित के अत्याचार सहने को मजबूर है पर वह पुनः साहस संजोती है। एक समर्थ नायिका शब्द चित्र यहां प्रस्तुत करना उचित होगा पति ने उसके बेटे के लिए जहर उगला टाइफाइड ही है कोई कैंसर तो नहीं जो मर जाएगा। इससे अधिक गिडगिडाना उसके वश में नहीं था समय ही नहीं था मदर डेयरी के सामने ठीक 8:30 पर उसकी बस छूट जाती है कलाई मोड़ कर सुइयों पर निगाहें डाली मस्तिष्क को अचानक बिजली का झटका लगा कंधे पर बैग डालकर गोद में फाइलों का पुलिंदा सहेज की हुई वह तेजी से कमरे से निकल कर ढलान पार करती हुई घर से बाहर हो गई बस के पायदान पर पांव रखते ही बस रेंगने लगी जान में जान आई बस छूटती देख रिक्शावाले से अठन्नी लेना भाई भूल ही गई। महिलाओं की आरक्षित सीटों के पास महिलाओं ने उसे जगह दी वह कृतज्ञता ज्ञापित करती हुई सीट पर फाइलों के ढेर को महिला की गोद में रखकर खिड़की के सारे टिक गई दो बच्चे सांस निर्दई पति बीमारी दफ्तर के चक्कर गिन्नी में घूमती ताशमहल की नायिका नहीं टूटी घर बचाने की कोशिश की पर घर पन्नो सा बिखर गया लेखिका का स्पष्ट संदेश अनावश्यक त्याग भी सुख की गारंटी नहीं।

शोध निष्कर्ष:

प्रस्तुत शोध आलेख से स्पष्ट होता है कि चित्रा मोदगिल आधुनिक उपन्यास कारों कहानीकारों की प्रतिनिधि साहित्यकार है। बहुत अच्छे साहित्य के लिए चर्चा में रही है और साहित्य समाज में सम्मान का दर्जा रखती है। उनके उपन्यास आवा और कुछ कहानियों के माध्यम से उनके साहित्य में नारी की स्थिति उसके सफल होते व्यक्तित्व पर विचार किया गया है। चित्रा मोदगिल स्त्री विमर्श के क्षेत्र में कुछ नए आयामों को छुआ है संघर्ष किया है और प्रताड़ना के विरुद्ध आवाज बुलंद की है उनके पात्रों ने उनकी लेखनी का स्पर्श पाकर विवश अवश जीवन से बाहर आना सीखा है इनकी कहानियों में स्त्री के प्रति अनेक अनुभव जनित विचारों में पर्याप्त वैविध्य है चित्रा मोदगिल हमें कई स्तरों पर सोचने पर मजबूर करती हैं इन की कहानियां उपन्यासों में स्त्री को प्रचुर स्थान मिला है सत्य से भरी नारी विषयक कहानियों से बेहतरीन दशा चित्रित की गई है। नायिका स्वयं कहानी के कथ्य के साथ साथ आगामी समाज व साहित्य की दिशा निर्धारित करती है। लेखिका स्त्री विषयक शब्दांकन में सफल रही है।

संदर्भ:

1. पुष्प गंधा पृष्ठ संख्या 39 दूध कहानी,
2. http://gadyakosh.org/gk/%E0%A4%9A%E0%A4%BF%E0%A4%A4%E0%A5%8D%E0%A4%B0%E0%A4%BE_%E0%A4%AE%E0%A5%81%E0%A4%A6%E0%A5%8D%E0%A4%97%E0%A4%B2_/_%E0%A4%AA%E0%A4%B0%E0%A4%BF%E0%A4%9A%E0%A4%AF
3. http://www.abhivyakti-hindi.org/aaj_sirhane/2004/aawan.htm

4. https://www.pustak.org/index.php/books/bookdetails/5063

5. https://www.bharatdarshan.co.nz/lit-collection/literature/742/bhookh-chitra-mudgal.html

Corresponding Author

Dr. Rajiv Sharma*

mittal.ajay786@gmail.com